किया जा सके।

पाठ्यक्रम विकास के उद्देश्य (Objectives of Curriculum Development)—पाठ्यक्रम विकास के उद्देश्यों को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया गया है—

1. ऐसे पाठ्यक्रम को विकसित किया जाये जो शिक्षक व छात्रों के मध्य अन्तःक्रिया व सम्प्रेषण क्षमता के स्वरूप को निर्धारित करने में सहायता करे।

2. पाठ्यक्रम में विषयों तथा क्रियाओं के मध्य के अन्तराल को समाप्त करके, बालकों के समक्ष ऐसी विषय-वस्तु को प्रस्तुत किया जाये जो उसे वर्तमान व भावी जीवन के लिए तैयार कर सके।

3. पाठ्यक्रम का विकास बालक की योग्यताओं, क्षमताओं व रुचियों के अनुरूप हो, पाठ्यक्रम बाल केन्द्रित होना चाहिए।

4. पाठ्यक्रम द्वारा बालकों में प्रजातांत्रिक गुणों को विकसित करना।

5. पाठ्यक्रम में उस विषय-वस्तु को भी सम्मिलित किया जाये, जिसके माध्यम से बालकों को वास्तविक जीवन के अनुभव प्रदान किये जायें व सैद्धान्तिक तथा क्रियात्मक ज्ञान को सहसम्बन्धित करके पढ़ाना।

6. पाठ्यक्रम द्वारा ऐसे गतिशील व लचीले मस्तिष्क वाले बालक का विकास करना जो जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में निर्णय लेने, समस्याओं को सुलझाने व नवीन मूल्यों का निर्माण करने में सक्षम हो सके।

7. पाठ्यक्रम द्वारा ज्ञान व खोज की सीमाओं को बढ़ाने के लिए नवीन अन्वेषकों का सृजन करना।

8. पाठ्यक्रम का विकास इस प्रकार से किया जाना चाहिए जो बालकों का सर्वांगीण विकास करे तथा इसमें उन क्रियाओं को भी सम्मिलित किया जाये, जिनकी सहायता से सांस्कृतिक विरासत (Cultural Heritage) का ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तरित करने में सहायता मिल सके।

9. पाठ्यक्रम को इस प्रकार से संगठित किया जाये जिसमें बालकों में नैतिक गुण विकसित हो सके; जैसे—सहनशीलता, ईमानदारी, कर्त्तव्यपरायणता, परोपकारिता, सहयोग, सहिष्णुता, प्रेम आदि।

10. पाठ्यक्रम में ऐसी विषय-वस्तु निर्धारित की जाये जिसके माध्यम से बालकों में उच्च स्तर की मानसिक क्षमता व अमूर्त चिन्तन की योग्यता विकसित करने में सहायता मिल सके। बालकों में आलोचना दृष्टिकोण व अमूर्त चिन्तन की योग्यता विकसित हो सके।

Scanned by CamScanner